गायत्री मन्त्र का कवितामय अर्थ

ॐ सर्वव्यापक जो सबकी रक्षा करते हैं भगवान
भूः सर्व को सत्ता स्फूर्ति दाता सत्य स्वरूप महान
भुवः दुःख के नाशक चिन्मय जिनका उत्तम ज्ञान स्वरूप
स्वः सर्व सुखदायक सुखमय परम आत्मा अलख अनूप
तत् अनन्त हैं सर्व सार हैं जिनका कोई पार नहीं
सवितुः सर्वोत्पादक रक्षक प्रेरक करें संहार वही
वरेण्यम् है वर्णन करने योग्य जगत में जिनका नाम
भर्गो ज्योतिर्मय पापों के भर्जनकर्ता पूरणकाम
देवस्य देते हैं हमको दिव्य प्रकाश शक्ति आनन्द
धीमहि ध्याते हैं हम सब पूर्ण ब्रह्म श्री परमानन्द
धियः हमारी बुद्धि वृत्तियों को वह दीनबन्धु भगवान
यः जो ऐसी महिमा वाले परमेश्वर हैं दयानिधान
नः सभी हम जीवमात्र के उर में जिनका वासस्थान
प्रचोदयात् वे करें प्रेरणा जिससे हम पायें उत्थान ॥

आदिदेव का श्रेष्ठ तेज जो उसका हम करते हैं ध्यान
श्रेय कर्म में सदा हमारी बुद्धि लगावें वह भगवान ॥